जे एगं जाणइ ते सव्वं जाणइ

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

इस संसार में अनेक विद्यायें हैं, किन्तु आत्मविद्या सबसे बड़ी विद्या है। जिसको इस विद्या का ज्ञान हो जाता है, उसके लिए कुछ भी अज्ञात नहीं रहता है। जिसने इस विद्या को जान लिया वह सबकुछ जान लेता है। इसलिए कहा गया है– **जे एगं जाणइ ते सव्वं जाणइ** अर्थात् जो एक को जान लेता है वह सबको जान लेता है। जो इस शरीर में है वह ब्रह्मांड में है और जो ब्रह्मांड में है वह शरीर में है। आत्मा ही एक ऐसा तत्व है जिसको जान लेने के बाद सबकुछ जान लिया जाता है। आत्मा सभी प्राणियों में एक है। उसमें कोई भेद नहीं है। सभी जीवों की आत्मा समान है। आत्मा एक अविनाशी तत्व है। जो भेद दिखलायी देता है, वह कर्मों के कारण है। जब तक आयुष्य कर्म रहता है, तब तक भेदरूपी शरीर दिखलायी देता है। आत्मा शरीर से भिन्न है। राग–द्वेष रहित होकर देखने से आत्मा, आत्मा है और शरीर इससे भिन्न दिखलायी देता है।

उपनिषदों में आत्मतत्व का बृहद् रूप से व्याख्यान है। अब प्रश्न उठता है कि आत्मतत्व को जाना कैसे जाये? आत्मतत्व के ज्ञान की अनेक विधियां बताई गयी हैं। राग–द्वेष रहित होकर आत्मतत्व की प्रेक्षा करने से आत्मतत्व का दर्शन होता है। आत्मा में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन और अनंत सुख का स्रोत है। मानव भौतिक सुखों के प्रति आकृष्ट होकर जीवनभर उसी में लिप्त रहता है और इसी को बहुत बड़ा सुख मानता है। किन्तु अंदर सुख भंडार इतना विशाल है कि उसका ज्ञान हो जाने पर उसका स्रोत निरंतर प्रवाहित होता रहता है। मैं कौन हूं? कहां से आया हूं? कहा जाऊंगा? इन तीन प्रश्नों से आत्मसाक्षात्कार प्रारंभ होता है। मानव अपने आत्मा को जानने का कभी प्रयास ही नहीं करता। उसकी दृष्टि बहिर्मुखी होती है। सत्संग के प्रभाव से, शास्त्रों के अध्ययन से और गुरुओं के सान्निध्य से जब मानव का विवेक जागृत होता है, तो उसे आत्मतत्व जानने की प्रेरणा मिलती है। संसार का आनंद आत्मतत्व के आनंद का बिंदुमात्र है। आत्मतत्व का आनंद सिंधु के समान है और सांसारिक आनंद बिंदु के समान है। हम बिंदु के आनंद को ही सबकुछ मानकर बैठ जाते हैं। इसीलिए ऋषि, महर्षि, मुनि जो ब्रह्मलीन रहते हैं, वे संसार को मिथ्या समझते हैं।

वेदान्त दर्शन में ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या का उद्घोष किया गया है। वेदान्त दर्शन के व्याख्याता श्रीमदाद्य भगवान् शंकराचार्य ने आत्मतत्व को सत्य माना और दृश्यमान संसार को मिथ्या। प्रायः सभी दर्शनों में आत्मा और जगत् के ऊपर चिंतन हुआ है। कुछ दर्शन दोनों को सत्य मानते हैं, कुछ दर्शन जगत को प्रातिभाषिक सत्य मानते हैं। कुछ दर्शन केवल जगत् को ही सत्य मानते हैं और आत्मा की सत्ता में विश्वास नहीं

करते। इस प्रकार भिन्न–भिन्न दर्शनों का भिन्न–भिन्न मत है। किन्तु आत्मतत्व की सत्ता को स्वीकार किये बिना जगत की सत्ता को सिद्ध ही नहीं किया जा सकता।

जो लोग जगत को ही सबकुछ मानते हैं, वे कंचन कामिनी के आनंद में ही अपना सबकुछ बिता देते हैं और अमूल्य मानव जीवन को नष्ट कर देते हैं। आत्मसाक्षात्कार की यात्रा कंचन कामिनी के त्याग से प्रारंभ होती है। इसको त्यागे बिना आत्मसाक्षात्कार बड़ा ही दुर्लभ है। मानव का जीवन संसार की आपाधापी में लगा रहता है। जब दुनियादारी से मुक्ति मिलती है, तभी आत्मसाक्षात्कार होता है। आत्मासाक्षात्कार ही मानव का प्रमुख धर्म है। आत्मशुद्धि साधनं धर्म अर्थात् धर्म वह तत्व है जिससे आत्मा शुद्ध होती है। आत्मा मूल रूप से ज्ञानस्वरूप है। वस्तु का स्वभाव ही धर्म कहलाता है। जो इतर चीजें होती हैं वे अधर्म हैं। जैसे पानी का गुण है शीतलता, अग्नि का धर्म है उष्णता। जब उनके गुण को विकृत किया जाता है तो उनका स्वरूप बदल जाता है। जब वह अपने स्वरूप में रहता है तो वह तत्व धर्म तत्व कहलाता है। धर्म व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है।

यह जगत् दो तत्वों से मिलकर बना है– जड़तत्व और चेतनतत्व। जड़तत्व वह है जिसमें पूरण और गलन की क्रिया होती है। दर्शन की भाषा में इसे पुद्गल या भौतिक तत्व कहते हैं। आत्मतत्व वह तत्व है जिसमें हलन–चलन की क्रिया होती है। ये दोनों तत्व शाश्वत हैं। इनके गुण पृथक–पृथक हैं। दोनों को मिश्रण को संसार कहते हैं। शरीर भौतिक तत्वों से बना है। चेतनतत्व इसे संचालित करता है। यदि चेतनतत्व न रहे तो शरीर नष्ट हो जायेगा। आत्मा हर प्राणी में होती है। शरीर के नष्ट होने पर आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में अपने कर्म के अनुसार चली जाती है। जड़तत्व इस ब्रह्माण्ड में रहता है। जब तक कार्मण शरीर का आत्मा से संबंध रहता है, तब तक जीव को शरीर धारण करना पड़ता है। जब आत्मा कर्मों से मुक्त होती है, तो वह मोक्ष को चली जाती है। संयोग, वियोग, सुख, दुःख चलता रहता है। आत्मतत्व को जानने के लिए ज्ञाता–द्रष्टा भाव होना चाहिए। तटस्थ भाव के द्वारा ही आत्मतत्व और जड़तत्व का ज्ञान हो सकता है। इससे जुड़ना बंधन है। जीवन को सुन्दर बनाने के लिए बाहर के दोषों को नहीं बल्कि अपने अन्दर देखना पड़ता है। दूसरों की तरफ एक अंगूली करने से तीन अंगूलियां अपनी और ही संकेत करती है। इसलिए दूसरों की बुराई न देखकर अपनी आत्मा को देखना चाहिए। आत्मतत्व का ज्ञान ही संपूर्ण ज्ञान है।